



# केकरापर करु सिंगार, पिया घर आन्हर

भूलनोत्सव मिथिलामे राम विषयक धार्मिकोत्सवक रुपमे मनाव'के परम्परा रहल अछि आ एकर पूर्णता पूर्णिमादिन, राखी दिनमे जा' क' होइछै। भूलन आ राखी मिथिलाक संस्कृतिक अभिन्न अंग रहोइतोमे आव किछु वरख जिका अहू वरख ई पतराएले देखल गेल आ विचारिक' देखने ई भूखैनक बात अइ।

लोकक उत्साहमे , एकरा प्रति लगावमे कमी अएबाक कएटा कारणसब होइतो एकटा त' ई अइ जे एकर सोझ सम्बन्ध मन्दिर आ कुटीस' रहल अछि आ कुटी एहिस' कटिक' छुटी क' लेने अइ। बाबन कुटीक जनकपुर आव मन्दिर-संस्कृति अपना लेलास' महन्थे आव श्रीसरकार छथि। डूरातोइ महन्थ घर-गृहस्थीक माया-मोह तोड़िक' वन'बला लोक, धर्म-आस्थाके नामपर कुटीमे चढाओल गेल खेत-पथार आ श्रीसम्पती सहितके महन्थसब चेलीन,दासी सहित आश्रमो चलब'बला, कुटीक खेत घरारी बेचिक' भोत्थरा मोट कर'बलाके संख्या अधिक अइ। बहुत कुटीमे धरम तर आ महन्थे भगवान उपर अइ। एहनमे जत' टिप द'क' भूला भइयो रहल अइ ओहो नौधरी। आव श्यकता छै जे विद्युतीय संचारके विकास भेने मनोरंजन आ आनन्दमे जे परिवर्तन आएल अछि ओहि हिसावे भूलनोत्सवोमे परिवर्तन आनए। डिवीडी, टिवी मनोरंजन सिरियल आ सिनेमा लोकके घरेघर भ' गेने आन ठाम जाय नै चाहैए आ जाहू चाहैए कखन, जँ कतौ



नीक आ उल्लेख्य व्यवस्था हुअए तखन। से जे नै करतै त' गैरघुम्मा नटुआके छुम्डछैया देख' राति-विराति नै जाएत। पहिने भूलन बहुत रागभावस' गाओल जाइत छैलै। पद-पदारथ सङ कजरी, भूला पावसक रास-रंग कचैत छलै। ओहन सुन्दर आ सुगम संगीत-नृत्यपर लोक एखनो लहालोटे, होएत की।

ई त' एकटा बात भेल आ दोसर कारण आरो कटाह अछि। बेकहला नवका पीठीक कुदकनमा संस्कृतिक भेलन्टाइनी जुआनसब अछि आ ओकरा सबके रंत-ताल अलगे अइ। वैश्ववीकरणक प्रभावे, आइ विश्वभरि -'चेन्ज आवर

वर्ल्ड' नाराक संग अन्तराष्ट्रिय युवा दिवस मनाओल जा' रहल अछि। अखुल्ला जुआन-जहान स्वतन्त्ररुपमे जीव' चाहैछ, जाहिस' कि समयेपर गन्तव्यपर पहुँचि सकए आ विश्व परिवर्तनक हाक द' सकैक ! अपनासबके संस्कृतिमे एहि अलगडाहि बातके कोनो अर्थ नै छै आ एहू लोकक जुअनका पीठीक समाड मनसा एहिमे प्रवेशो क' गेल अछि। ओकर मनोरंजन आ स्वीकृति अलग रहने भूला, होरी सब सनक परम्परागत मेला-ठेला, उत्सव-मनोरंजन सोहाइते नै अछि। अपन परम्पराके नेरिऐठक' नव परम्परा चाहैछै आ चाहैछै नवता आ अखुल्ला।

असलमे ई परिवर्तन आखिर छै की ? एकर आधारभूमि, भावभूमि आ स्थायीत्वक प्रमाण की छै ? ईसब परिवर्तन जे चाहैए से एसगरे, अगवे आ सम्बन्ध हीन। समाजमे, परिवारमे, देशमे संस्कृति आ परम्परामे एकर तालमेल केना बैठतै, तेकरोपर ध्यान देब अनिवार्य अइ। समयक गतिके अकानब बुधियारी होइतो व्यवहारी बनब परम्परावादीक लेल आवश्यक होइतो एकर आधारभूत मिलन-विन्दु की त' ? एकर चिन्तन करब समाजशास्त्रीय आवश्यकता अछि। कारण अपन मरम्परा आ संस्कृतिके त्यागि जे आकाशमे उड़' चाहै छै ओकरा बुझइमे नै अबैछै जे बास आ विकासक आधार धरती होइत छै, समाज आ संस्कृति होइछै। बदलावके लेल सम्पूर्ण समाजके तालमेल बैठक' बदलू नव मूल्य-मान्यता स्थापित करू। चिड़ै-पंक्षी जे अकाशमे उड़ैत अछि, ओ खोताके, बैस'बला गाछके नइ बिसरैत अछि। हिनकोसबके अपन संस्कृतिके, समाजिकताके धरातलीय आवश्यकताके अवधारिअक' परिवर्तनक आग्रही बनी, से सब कहतै।

ई दुनू बात दू पीठीक मनोविज्ञान आ महत्वाकाँक्षाक उद्वेग अछि। कालखण्डीय प्रभावक कारणे नवका पीठीके पाँख जनमल छै आ उड़ान भर' चाहैए आ पुरना पीठीक शोर पताल धसल छै आ तँ ओ नै ओकरासबके नव आकाश देब' चाहैछै आ ने युगीन परवर्तनके हवद' स्वीकारमे विश्वास रखैछै आ एहिस' द्वन्द जे उत्पन्न भ' रहल अछि ओहिस' देखमे अबैछ जे भूलनसब सनके मेला-उत्सवमे कमी आएल अछि।

## मासिक मैथिली कविगोष्ठीक शुभारम्भ



मैथिल ब्राह्मण समाज, मासिक मैथिली कवि गोष्ठीक नियार-भजार साहित एकर प्रथम बोहनी शनि ए दिन जनकपुर स्थित अपने कार्यालयमे सुन्दरहंगस कएलन्हि। मैथिली कविगोष्ठीके पतियार जगजियार अछि आ कवि गोष्ठीमे विविध भाव, भास आवाज आ मुद्दासब उठैत देखल जाइत अछि। कविलोकनिक काव्यात्मक प्रभुत्व आ काव्यमे उठल विषय-सन्दर्भ एवं एहन प्रमाणि रहल जे एकर प्रभाव समादरनीय देखल गेल। बहुत महत्वपूर्ण बात ई अछि जे कवि गोष्ठी लोकके ध्यान आकृष्ट करिते रहलैए आ एहि आयोजनास' मैथिल ब्राह्मण समाज अपनादिस ध्यान दियाब'के उत्तीम प्रसाद जे कएने अछि ओहिमे ओ सफल अछि। समाजक आयोजनामे संचालित कवि आ श्रोतामे ब्राह्मण आ कायस्थेटाक उपस्थिति रहने गोष्ठी थकमकाएल धक्चुकीस'

सुटकल रहल। सभा-सोसाइटी लोकके डोरियाक राखमे बड नीक हथियार एखन सेहो बनंगेल अछि। जनकपुरमे राजावादी कार्यक्रममे दुइएतीनटा कविक उपस्थितिमे चलल कवितावाचन थैहर-थैहरक' घोल नीक उपस्थित कए देने रहैक। मैथिल ब्राह्मण समाजके संगहि पवन भा जीके पावन कर' मात्रे आगवैत स' जँ ई नहि अभिप्रेरित होएत त' कवि गोष्ठी बहुत दिनधरि चलि नामकमा सकैए। मुखपुरुख कवि दिगम्बर भा दिनमणिके संगहि कविकाशीकान्त भा, विजय दत्त मणि, प्रेम विदेह ललन, प्रकाश प्रेमी, मणिका भा, पूनम भा, देवेश्वरलाल मुन्ना, विजय मस्त, आदिक कविततासभ युगीनसन्दर्भ आ समकालीन भावधाराक उत्कृष्ट आ अनमोल कविता सब वाचनक' मैथिली काव्य साहित्यके रचनाधर्मिताक अगिलका ओरके आरो आगू बढौलनि।

### सन्दर्भ विश्लेषण

## भेटितए त' बनिजतहुँ पावस, मल्हार सडे भुलागीत

बहुत भूखैनके बात छै जे पहिलुका साओनक राग रंग आव रतियो भरि नै रहगिलै। बेकहल-बेठुआ राजनीतिक उठाडारि उपरौंफमे समाज आ संस्कृतिक समाचार आव टोड़यो-टापर देने नै अभैर रशल छै। ई हुक आ टीस सबके मनमे, खासक' सैबकाहा मनकक परम्परावादी लोकमे निमनस' घर कएने छै। अपनो सबके पालि, पानिमे समयके गणना भलेहि दिन-रातिमे वा मास-बरखमे हुअओ मुदा प्रत्येक समयके एकटा विशेष पहचान होयत छै आ एहि पहचानसबस' लोकसंस्कृति आ लोकजीवनमूल्य बनैछै। बात एत' एतए उठल अछि साओनक। एखनुक ऐ वैश्वीकरणक उपभोक्तावादी अधखरुआ पोलखाह उत्तरआधुनिकतावादी युगक समय-सन्दर्भ नव संरचनाक विकास आ आन्दोलनी परिवर्तनक दौरस' गुजरि रहल अछि जे सुदीर्घ परम्परा आ परम्परागत जीवनशैलीस' निर्मित लोकजीवनमूल्यके किछु गरने गुदान नै करैछै। ऐस भेलैए कि त' परम्परावादीके आधुनिकतावादी नै मानै छै त' परम्परावादीक हिसावे एखनुका समय आ सोंच फोंक आ छुच्छ-भुच्च भेल जा रहल छै।

ऐ बातके थोड़ेक अखियासिक' नेडरअएने देख'मे अबैछ जे परम्परावादी जीवन पद्यतिमे असाओन मास छलै, वरखा बहार, गीत मल्हार,

फुला, मधुश्रावनी शिव जलढरीक समय समय। मादकता आ सौंदर्यक महमही एकर असल पहचान छलै आ से रहि नै गेलै। घनहन भावुकतामे ई अनुभूति त' अवश्य होइत छै जे प्रकृतिके अपन साज-श्रृंगार आ स्वर-भंगिमा होइछै आ साओनमे एकर राग-रंग बहुत निखरिक' देखाइदैछै। सदानैतस' साओन पावस-मल्हार आ फुला ल'क' प्रसिद्ध आ प्रतिष्ठित रहल अछि। पावस मुख्यरुपेवरखागीत अछि आ मल्हारी गीतक टेरेमे विरहक अगिन मनके दहकबैत लहकबैत अछि। एकर सम्बन्ध आ सौंदर्य प्राकृतिक उन्माद आ विरह अगिनस' रहैत अछि। मदन वेदनके तड़पन बड़ सिरहबैत तड़पवैत छै। पावसक स्वर-संगीतमे वरखा-बुल्लकीक जे रस वरसन होइछ ओ मनमोहक आ हिलसाब'बला होइछ। श्रावणी वरखाक प्रत्येक बुल्लमे एकटा अपूर्व धुन सुनाइ दैछै। शब्दहीन स्वर-संधानमे, एकर स्पन्दन आ अनुरागक मंकारमे जे मिठास आ बेकलता होइछ ओकर आनन्द शब्दमे नइ अनुभूतिमे होइछ। गीत पावस, मल्हारके होइछै त' फुलागीत राग-ताल मचकीक आसमे भास मारैछै। फुला घर आ फुलवारीमे होइछै। आध्यात्मिक भावक फुला मन्दिरमे होइछै। मुदा समयके एकटा एहन रुतबा रहै जहिया घरआइमे दाइ-माइ आ नेना-भुटका मुलै त' मन्दिर,कटीमे राम-कृष्ण भगवान। गीतक स्वारानन्द दुनू ठाम बाँकी पृष्ठ ३ पर

### अन्तरवार्ता

## सांस्कृतिक जीवनमूल्यक रक्षा अवश्य करी !

— कोरिना होल्थसन

जर्मन, मेडिकलक छात्रा



केहन साहित्य अहाँके पसिन अइ ?

- परम्परागत आ पुरान शास्त्रीय साहित्य बेसी पसिन पड़ैए। पुरान साहित्यमे शास्त्रतमूल्य आ कला-सौन्दर्यभरपूर रहैछ। आवक लेखकमे अलंकारिकता अवलोकनके ने समय छै आ ने पाठकके एहि प्रति एतेक आवेश रहि गेल छै। व्यक्तिगत रुपमे ई एहन हमरामे बहुत अछि। **जीवनक प्रगतिके अहाँ कोना देखैत छिए ?** - आधुनिक जीवनक सब क्षेत्रमे बड्ड प्रगति छै आ ई एकर विशेषता छै। प्रगति व्यापक होइतहुँ, मानवीयताके ह्रास भेले छै। परिवारिकताक अभाव सेहो छै। जीवनक बारेमे सोकचक परम्परा जेना खत्म भ' गेलैए। एखनुक सब किछु नीक होइतो शाश्वत जीवनमूल्यमे जे कमी भेल जा रहल छै, ओ हमरा पचि नै रहल अछि। एहि व्यस्त जीवनमे छुट लोक पैसा आ प्रतिष्ठाके पाछू लागल छै।

अहाँक कथा लेखनक की उद्देश्य अछि ?

- कथा लेखन अपना आपके प्रतिविम्बन आ स्वचिन्तनके अभिव्यक्ति देवएमे सहायक होइछ। ई जीवनके, समाजके बारेमे हमर की सोच अछि, तकर स्पष्ट छाप हमरा कथामे व्यक्त भेल अछि। हमर उद्देश्य ई नइ अइ जे हम बहुत प्रकाशित होइ,बरु ई अछि जे अधिकस' अधिक अपन सोच आ चिन्तनके लोकक सोझा लाबी। स्वान्त सुखायोके लेल हम कथा लिखैतछी।

अहाँके फेबरेट लेखक केसब छथि ?

- दोस्तोस्की ! हर्मन हेसके हम बड पढ़ै छी। वोल्फगैंग वोर्चर्ट सेहो पसिनक छथि।

एखन भ' रहल सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनके अहाँ कोन रुपमे देखैछिए ?

बाँकी पृष्ठ ३ पर



प्रकाशक : **कुमार भास्कर**  
सम्पादक : **प्रा. परमेश्वर कापडि**  
सहसम्पादक **कैलास दास**  
कार्यालय : जनकपुरधाम-१६, पुलचौक  
फोन नं.: ०४१-५२४९५२  
मो.नं. : ९८४४०२२५९४,  
: ९८४४०५३९७३  
: ९८४४१००१६४  
ईमेल : **dhuadhaja@yahoo.com**  
मुद्रक: **त्रिदेव अफसेट प्रेस**  
जनकपुरधाम, फोन नं.: ०४१-५२२५९०



## सम्पादकीय

# अध्यादेशस’ राष्ट्रपति लेल दूधमाछ दुनू बांतर

कानुन विहीन अवस्थामे नेपालक अनिवार्य आवश्यकता संविधान अछि । दलसब एखन अपन अड़ानबला प्रतिबद्धता सरकारके बनौने अछि । संविधान शून्य अवस्थामे, तरलताक संवेगके गहनतापूर्वक अवधारि, राष्ट्रिय सहमतिके आधारपर राष्ट्रके अग्रगमनके सवटा बाट स्वच्छतापूर्वक निकालब एहनमे जरुरी देखल जाइछ । बड़भारी अधलाह बात ई देखल जाइछै, जे कानूनी दावपेंचस’ दलसब अड़ान पर अड़ान सत्तास्वार्थलेल ल’ देशके नाहकमे हलुआ हरान कएने अछि ।

राष्ट्रपति सरकारके आ मुख्यदलसबके सहमति कर’के लेल आग्रहपर आग्रह क’ रहल अछि । ओम्हर चुनावआयोग बजावता आग्रह अनुरोध दलसबस’ क’ रहल छै, जे विनु संविधान संशोधन कएने राष्ट्रिय चुनाव सम्भवे नहि अछि । एखन संसद छैजै जे संविधान संशोधन होएतै आ कारण एकरा लेल दूतिहाइ सांसदके आवश्यकता छै, आ तए ई असम्भवे छै आ से नइ भेने त’ अन्तरिम संविधानके सरकार औचित्य समाप्त घोषणा करओ से नै करतै त’ अन्तरिम संविधानके धारा ३३,६३ आ १५४ चुनावके एक्को डेग आगू कोनहु हालतमे आगू बढइ ने दैतै ।

अपनासबके एहि ठामके दलसब कानूनी एवं संवैधानिक स्वच्छ, विकल्प समयेपर नइ द’क’ एकरा देश डुबब’के अन्तिम विन्दुपर ल’ जा’क’ एहन विकट अनिवार्यता उत्पन्न क’ दैछ जे नाक दरड़िक बलपेली सहमति-समझौता करए पड़ैत छै । अध्यादेशस’ देश चलौने अनर्गनके राजनैतिक अपसंस्कृतिके विकासस’ कानूनीराजके धज्जी उड़ि रहल छै । वजेट अध्यादेशस अएने देशके लोटिया डुबल छै । एहनमे कामचलाउ सरकार विनुराजनैतिक सहमतिके मनपदी संविधानसभा निर्वाचन २०६९ लाबि शुक्रदिन राष्ट्रपति समक्ष पारित हुअलेल पेशक’ राष्ट्रपति कार्यालयके दूधमाछ दुनू बांतर क’ देने छै ।

एखन राष्ट्रपति कार्यालय केहना बाँचि दिन खेपि राष्ट्रक संरक्षकक भूमिका निमाहि रहल अवस्थामे एकरा सरकार आ विपक्षी दलसब अपना-अपना स्वार्थके हिसावे मरखाह, वदखाह बनव जे चाहि रहल अछि से नइ क’ क’ देशके संविधान निर्माणके पुनर्ति भावनाके आदर्शके आगूमे राखि नेपालक नवनिर्माण आ संरचना विकास करब छोड़ि आन दोसर कोनो विकल्पे बाँचल नइ अछि ।

## संस्कृति - सन्दर्भ

# भुले सियाप्यारी, भुलावत सखिया

साओनक सङे मिथिला-मैथिलीके भावनात्मक आ रागात्मक सम्बन्ध रहल अछि । पावस गीतके आ साओनी बुन्न-भिसीक मेधा-मिलानक बात सेहो पुरान आ रसगर अछि । श्रावणी शिवपूजा, मधुश्रावणी आ भुलनोत्सवक अलगे रागरंग अछि । कजरी पावस आ मल्हारगीतक बास अपन लोकमानसमे बहुत गाँहीर धरिक अछि । सबस’ सब एकरा जही कोणस’ देखबै सेहे अटलदगर आ हिलसगर लागत । धरि भूलनक आस आ भास मनमे ओहिना मचकी मारैत रहैत अछि—

**भुला लगे कदमके डारी भुले सियाप्यारी ना  
भुले सियाप्यारी भुलावत सखिया  
भुले राधाप्यारी भुलावत रसिया  
भुलत रसिया, भुलावत सखिया  
भुलत सखिया, भुलावत रसिया  
भुले सियाप्यारी भुलावत रसिया**

ऐमे रसिक भाव आ सौंदर्य-श्रृंगारक लसगर भाव अछि । ई अहाँपर अछि जे एकरा जेना लिअ’ । मिथिलाके लोक सेसब नै विचारैछै, ओ त’ अपन रामसियाके मनमचकीपर भुलबैत रहैए । भुआक’ भगवानोके आनन्दित क’ दैछ आ अपन मन त’ ओहिना भरि ठेहना रसमे वोड़ल रहैछै । आस आ भास मनेमन चलल करैछै । एकर ओजह छै जे साओनी भूलाक असल भावभूमि छै, मन । से साधु मन हुआए वा लोक मन-मानस । भागवत भा अनुरागी एकरा हृदयस’ पृष्ठपोषण करैत, राम-कृष्णकेचरणमे अर्पित करैत रहल अछि । कुटी आ मन्दिर एकर संगीत आ नृत्यस’ अविभूत भ’ एकरा उत्सवक रुपमे स्वीकार रहल अछि—

**रेशमक डोरी मलिनके पलड़ा  
कदमक डाढ़ी, भुलावत भुलना  
भुले सियाप्यारी भुलावत सखिया  
भुले राधाप्यारी भुलावत रसिया  
भुलावत सखिया, भुलावत रसिया  
भुले सियाप्यारी भुलावत सखिया**

भुला मथुरामे लगैछै । वृन्दावनमे राससङे एकर रंग खूब जमैछै । हाय रे मिथिला, पावस, मल्हार सङे मिथिलामेक भुलाक रस-वर्षन ओहिना संसारमे शोर अछि । भुलनोत्सव तीनू ठामक बड़ नामी आ उपरा-उपरीक अछि । एहि ल’क’ साओन महिनामे मन्दिर आ कुटीमे मेला उत्सवक सुन्दर वातावरण रहल करैत अछि ।

भुलनोत्सव मिथिलाक संस्कृतिक अभिन्न अंग अछि । एकरा लोक सांस्कृतिक महोत्सव सेहो कहल जाइछ । ओना जनमपुरमे, भुलाक सोभ सम्बन्ध श्रावणी भूलामेलास’ अछि आ एतए एकर परम्परा बहुत प्राचीन रहल अछि । जनकपुरक बढका त’ बढका, ननटुमो कुटीमे भगवानक भुला भुलाओले जाइत छलै । मोट-पातर भुलागीतक मधुर स्वर चारु भरस’ सुनाइ दैत छलै । भुलामेलामे, जनकपुरमे धरोहिया लागल लोक ढङरि जाइत छलै । खेती-गिरहस्तीक रोपनी-डोपनीस’ लोके छुड़ी रहल, कदवा पखारीके ठेहियाएल लोकक उर्जहिया भीड़ लागि गेल । एगो आउर बड़ बढियाँ बात इहो रहै जे भुलामेला रातिमे लगै । रतुका मेला लगने, दिने-देखार लोक खेती-गिरहस्तीके, माल-जाल आ घास-भूसाके बाज-वात क’ध’क’ उसरि लिअए आ बेरिएस’ बटखर्चाक मोटा-चाटा बान्हि नेरीए-बुच्ची, मौगीए-मानुस हेंरक-हेंर ढङरि जाय— जनकपुर मुँहेक’ । कुटीयोसब अपना जनिते खोजि-खोजिक’ नामी-गरामी नटुआ नचनियाँ, गुणी गवैयासबके सटा-भत्तापर अनै । नटुआसब त’ नचै आ तैया गुणी गवैयासब खाली पद-पदारथ, पावस, भुलासबजे गवै त’ खूब जमै । तबलाक गुमकी थाप आ हल्हल्लीक राग-रंग कमाल करै—



**सखि हे सावनके बुन्न-भिसी  
पियासङ खेलब पचीसी ना  
सखि हे सावनके बुन्न-भिसी  
पियासङ खेलब पचीसी ना**

**गोर वदनपर कारी चुनरिया  
पातर कमरिया ना  
सखि हे सावनके बुन्न-भिसी  
पियासङ खेलब पचीसी ना**

**मुँहमे पान, नयनमे काजर  
दाँतमे मिसिया ना  
सखि हे सावनके बुन्न-भिसी  
पियासङ खेलब पचीसी ना**

**गरमे नेकलेस, हाथमे कंगन  
पयरमे पैजनिया ना  
सखि हे सावनके बुन्न-भिसी  
पियासङ खेलब पचीसी ना**

कहली त’ जे तहियाके गुणी गवैया आ व्यसजीसब पढल-लिखल तेहन नहियो रहने शास्त्रीय धुनपर, ललित संगीत रस ल’ल’क’ गवै । संझा पराती गाम-घरमे गाब’के परम्परा बहुतो ठाम रहै । आ उसब एकरा धर्म आ भक्तिक बात बूझै । तै ओकरामे निष्ठाभाव रहैक । पावस अधिकतर हिन्दी छाँहीक रहैक—

**घिरी आइ रे बदरबा डर लागे  
हरत भरत चहुदिशि चमकत  
शीतल जल बरसाबे रे अखढ़बा  
धीरे धीरे आइ रे बदरबा डर लागे**

साओनक परिचय वर्षास’ अछि आ वर्षा ओ जैमे कजरी, पावस आ मल्हारक सुर-तान टेराए, लोक मनके पघलावए । भुलासङे कजरी आ मल्हारक मेलपाँच बहुत छै । भुलनोत्सवमे ओहुना भुलन गबैत काल भुला, मल्हार पावस गएबे करैछै आ से बड़ सोहाओन आ मनभावन लगैछै । ई हे रसगर राग-भाव मन मानसके जखन-तखन उर्मंगित तरंगित करैत रहैछै ततवे नहि कामकर्दा लोकके ई ऊर्जा प्रदान करैछै आ एकरेबले ने ओसब रौद आ बरखाक भटकके खेपैछै । अपनासबहक किछु कजरी शास्त्रीय भावक आ किछु गूढ रागक अछि । कालान्तरमे ई

बाँकि पृष्ठ ५ मे

ओ जे कएलनि E-mail dhuadhaja@yahoo.com

अहाँ नै कहबै त’ लोक बुझतै गमतै केना ? अखैनतो जे मुहजाब लगाक’ गुम्मी सधनो, ठौंसा वेड फुलल बैसल रहबै त’ बदिअल-बहसल विन विचारीसब उदाम बनल बलधौसी बलपेली कैरते रहत ! एकरा रोक’ टोक’ आ सैर-साबतु कर’के लेल संचारी बनू आ सोभे निशंक भ’क’ E-mail करु !

— अपना सबके समीक्षाकके, समीक्षानामे मुहजाब, गलफांस किए लागल छनि, से नै जानि । पत्रकारोके धर्म वनैछै जे औढ-घातमे दवल, पडल रचनाधर्मीके खोजि खडहारि प्रकाशमे आनाथि ।

रमेश का. कुम्हरोडा

— कृष्णशंकर मिश्र वास्तवमे महान लेखक छथि मुदा अनर्चिन्हारे छलाह । एहन सुन्तर लेखक’के छपहिके चाही । हमरा जनिते ई अपनो हिछनर, छगनरेरिया छथि, तै आइधरि पाछा पडल रहलाह ।

— भुषन. पत्रकार

गत अंकमे कृष्णशंकर मिश्रके बारेमे, जानि,बूझ बड़ प्रसन्न भेलहुँ । साधुवाद !

रमेश साह. ठिल्ला गठिहन

— मिश्रजीके प्रकाशमे आनि, हिनकर विशिष्ट रचनासबके सम्बन्धमे सबके ध्यान आकृष्ट करा क’ अपने मैथिलीके बड़ पैघ उपकार कएल । साधुवाद ! एखनहुँ एहन बहुत-बहुत रचनासब आ रचनाकारलोकनि छथि जे प्रकाशन आ प्रसिद्धिके मुहं जोहि रहल छथि ।

महेन्द्र यादव, लहान



धडरा-चासः

मानव अधिकार !?!

डाक्टोल

आब त’ तेहन तेहन बातसब ने होइछै, से बम्हहिमे नै अबैए । जेना भेल महिला अधिकार । महि ला’ माने त’ सोफो बुझैछिए जे मथि लाउ ! एकर फड़िछाएल अर्थ भेल मथिक’ लाएल अधिकार । तहिना भेल मानव अधिकार कर्मी । मानव माने मानि लेबअधिकार , से केहन त’ करमी लती सनके । एहन लतिया अधिकार जे अनेरेके लत्ती जकां नमरल, छारने जाए ।

आब परसूके बात देख’ दैछी । की दोन त’ भने कहै । ... हं बिसूकल बात,भल मन पड़ल । कहै मानव अधिकार दिवस । दिव्य स’ दिवस बनल होतै से कथिला नै मानव ? कहब त’ मानिलेब । नै मानव त’ ओना घुसैठ देब । तहूस’ नै होएत त’ भौतिक कारवाइ क’ देब, तैला मानि लेब । आध्यात्मिक भासामे दिव्य त’ होइतहि अछि । तैमे ऐ ठाम मानव नै मानव बला बातके कथिला घुसैठै छी । मारि डरे ऐठाम सब दिनस’ भुत पड़ाइते छै । ए जग, कोन एहन बात छै, जे लोके अरधै छै,पचै छै ? मर,सन्धि(सहमति क’क’ अपन अंटाइन अघाइन अनुसार फँटौजी क’लेत । कोनो बातके गोबर माटि लगाक’ निपापोती क’ देत । लोक भावना जाओ कतौ चुल्ही भाँड़मे ।

से कि कहू, एहिना एगो काजक्रममे लौलस’ चला गेल रहए । ओत’ एगो नेता टेबुल ठठा( ठठाक’ कहै, मानव अधिकार । मानव अधिकार । हम लागी अब्बल दुब्बल लोक । मारि त’ क’ सकिती नै । अब्बल पिताए मारि खाए ला’ । से ढरे उठिक’ कहलिए ( ...मानव । मानबे करब । कथिला’ नै मानव । नै मानव त’ अहाँ सनसन बलिया चाँढ़सब जीय देत ?

आहि रो बा ! तखैनते एगोटे केंकियाइत बाजल ( मानब...अधि(का(र ! हमरा ओकरापर बड़ दया लागि गेल ।...आ(हा(हा, चु:चु! हे बाँहुबली । हे लठिया कुमर । हे अनकर राजनैतिक अधिकार हड़ैफ क’ धडराचास कर’बला, निपनियासब । चुनावमे हारलोपर, मनोनित भेल नेता( ठेठासब ।...हे बाबा नै, दादा नै,सुग्गा नै मैना नै , मानि जइयौ ! हे की करबै, बुझबै एक कलम माफे सही । जाय दिय, गरीबो, अब्बल लेल, कनिको कालला’ मानि जइयौ । नै तरौका मनस’ , नै आत्मास’ त’ उपरो मनस’ मानि जइयौ । कहियौ ( हे बात मानव । मानव अधिकार ।

मर बाँहि, आउर गोटे त’ लगलै भाषणेमे मुह दुस’ । लावा(फड़वी कर’ । मानव अधिकार । मानव अधिकार । मानव अधिकार ! जे अबै से भखै मानव अधिकार । अगब(एकछाहा, एकठौहरी(एकमुहरी, सबके मुंहस’ एककै लवज बहराइक( मानव अधिकार । सबके, सब अर्थ लगै ।

आब हमरा त’ ओत’ दूध(माछ दुन्नू बाँतर भ’ गेल रहए । मुहमे दी धान त’ फुटि जाए लावा । हाय हौ भाला बाबा ! पहिने त’ चाँढ़ डरे छुलकले मना गेल रहए ( मानव अधिकार । मरल( मराठी, लोकपर दया,मया लागि गेल रहए तैं कहि देने रहिए आ लोके मानहूँके सिफरिस क’ देने रहिए,( कहि दियौ न यौ, मानव अधिकार । आब ऐ तेसर चरणमे आबि,सबके सब मुँहे दुसए, खौम्फाबए,लुलुआबए ( मानव अधिकार ! एकरे कहैछै मानव

सांस्कृतिक.....

- वैश्वीकरणक कारणे आपसमे, एक-दोसराके समझदारी बढ़लैए । ज्ञान आ तकनीकिक जे विकास भेलैए, ओ सकारात्मक छै । मुदा लोक अपन जड़िमूलके, अपन सांस्कृतिक माटि-पानिके सबसरि रहल छै, ओ नीक बात नै छै । एकर अभावमे लोक अपन पहचान गमा बैसत आ परिणाम ई होएतै जे लोक पहचानहीन भेने एकरडाह भ’क’ कतौके नै रहत । सांस्कृतिक जीवनमूल्य अनूप होइत छै आ हमरा सबके एकरा सहेजक’ रखबाक चाही । जर्मनीक लोक एहिलेल संघर्षरत अछि—अपन-अपन परिचितक रक्षाक लेल । नेपालके सन्दर्भमे कही त’ हम जे दस वर्षमे एत’ आबौ त’ देखिए जे ओ नेपाल आब रहिए नइ गेलै, त’ हमरा बड़ दुख होएत । हमरा जनिते यूरोपके यूरोप आ नेपालके नेपाले भ’क’ रहने नीक ।

**अहाँसब स्वतन्त्रताके केना लैत छिए ?**

- वाक/लेखन स्वतन्त्रता प्रजातन्त्रके लेल अपरिहार्य छै । जनसामान्य जे नइ सोचै छै ओ लेखक देखैछ, सोचैछ आ तएँ एकर प्रकाशन होएवाके चाही ।

**एखनुक समयमे अहाँ केना सम्बोधन करबै ?**

- लेखकके चाही जे अपन समाज, देशके कोनो प्रकारक समस्याके उठबै आअ पन क्षताके राष्ट्रिय मुद्दाके समाधानक रुपमे लगवैथ से हमर अप्पन धारणा अइ ।

**जर्मनीक जीवन संघर्षक की स्वरुप छै ?**

- ओत’ वैचारिक आ रोजगारीक संघर्ष बड़ छै ! देश विभाजनक दंशक दुख सोहो बड़ छै ।

भेटिए.....

भरिपोख रहैक आ म्फुके नाम लैतेमातर मचकी मारि आनन्दस’ गाब’ लगै । मधुश्रावणी साओनमे नव विवाहिता ब्राह्मणदि कन्याक फुल लोढन आ शिवपूजन गीतानन्दस’ सराबोर रहैत छल । ऐसबस’ एकटा संस्कृति एकटा परम्परा आ एकटा नव भावबोधके जन्म होइत छलै । आधुनिकताक खुरदौनी आ विकासक अन्हर-विहारिमे सबटा अपन अलोपित भ’क’ विरान लगैत अछि । नवका पीढ़ीक अपने जाइ-जनमल एहिस’ अपरिचित, अनचिन्हार अछि । ऐ बातके फखैन उदेवेग सबके लाग’के चाही की नइ ?

साओनमास सओहाओन लगैग छल’ से परम्परागत लोकगीतक पद्यतिक चलते ।

लोकगीतके पहुँच आ प्रभाव तहिया जे जतेक छलै आबक पढ़लाहा शिक्षितक शिष्ट साहित्यमे कत’स’ पाएब । तहिया जीवनसङे लोकसाहित्यक सन्तुलन आ सहकार्य बहुत गाढ़ आ अभिन्न छलै । प्रत्येक आत्मा आ आत्माक प्रत्येक संवेगसङे लोकसाहित्यक तालमेल बैसल छलै । सखि हे सावनके बुन्नफिसी, पियासङ खेलब पचीसी ना । सनके रंग-रभसस’ भरल गीत होएक वा बदरा उमरि घुमरि घन बरसे बुन्दिया बरसन लागेना । सुनिक’ जे सिहरन, मनभावन मिठासक बोध होइत छलै आ आबक साहित्यमे कतस’ पाएब । इएह कारण अछि जे आइ शिष्टसाहित्य समाजस’ कटिक’ अछि आ तएँ परम्परा नै के नै बसा सकल अछि । मन उचटिक’ साओन आ पवासपर चलि जाइत अछि

आ बुन्ना-बुन्नी बरखा एवं फिहिर-फिहिर बसातक मादकता मनके पघलाब’,बहसाब’बला रहैत अछि । ए दुखमे अनन्त सुख दहापैल रहने ई अनूप, अपूर्व लगैत अछि । एहि अनमोल सांस्कृतिक सम्पदाके अलोपित हुअस’ बचाब’के लेल बेचा नहियो रहने, ऋणो-पैच काहिक’ भेटिए त’ लपकले हपसिक’ बनिज लबितहुँ ! किछु परम्पराके मौलाब’ उपटाब’के नै सरि-साबुत क’ध’ एकरा आगूमुहें बढौनाह अपन मौलिक पहचान आ सांस्कृतिक सौरभ बाँचि सकैए । एकरा बचाब’के एकटा आउर नीक तरिका छै जे एहन लोकगीत भावक रचना आओर बहुत लिखाओ, ओहिमे आधुनिकताक पुट जरुर रहओ आ एकरा परम्परित सेहो कएल जाय ।

०००

अधिकार । एहने एत’ होइछै मानव अधिकार । एकरे कहैछै जनआन्दोलनी भावना । देखनहुं छिए कतौ मानव अधिकार,की नै ।

बड़ मन अधोर भ’ गेल, त’ नडारी पट(पटवैत घर घुरि अबैत जे रही, त’ निसोहर भेल संघीय लोतान्त्रिक गणतन्त्रक संविधान भेंट भ’ गेल । घेवना कर’ लागल( हमरो अपन मानव अधिकार दिया दिअ । ऐपर हमरा आरो बड़ छगुनता भेल । आहि रौ वा, मः तोरी भलाके । एहन अनोन बिखाइन बात कथिला बजैछी । सबके त’ सब अधिकार अहींस’ भेटै छै । सब अहींस’ अछि , तैयो अहाँ एहन हिलखा,बिलखा,निसोहर भेल बजैछी ! ऐपर अर्द्ध बताह भेल बाजल( नै बुफली, नै बुफली, एते खुदी खइली ! रे ऐ नेपालमे, संघ बनलै नहिए आ भ’ गेल्लै संघीय नैपाल । छै एत’ दल तन्त्र । सब निर्णय, सब राजनैतिक हौड़भेंड करैछै दले सब । तब त’ ई सोफो भेल्लै दलतन्त्र । लोक ऐमे निपत्ता छै । तैयो कहै छै लोकतन्त्र । आउर आगू देखियौ ( कहि देलकै गण तन्त्र । गणके असल अर्थ होयछै लोक । अखैनते त’ कहलीग’ ऐ तन्त्रमे लोक निपत्ता छै, आ औतहि अंग्रेजीक गन माने बन्दुक भेल । एत’ बन्दूकके भासा आ धाक चलैछै । गनेके धाक धौसस’ राजनैतिकक गोटी लाल,कारी होइछै । बन्द(हड़तल, अपहरण(चन्दा आतंक, सन्धि(समझौता सहमति आ पद वितरणसब गने बले गनगनाएल छै । नै गन त’ गौन । अंग्रेजीक गौन माने त’ हौइतै छैक गेल्ली । गेली माने चलू, हटू भागू । राजनैतिक आरि, दुआरिस’ फुटकू । आब अहीं कहू, एहनमे हम्मर मानव अधिकार, नैसर्गिक अधिकार कत’ गेल । हमरे निर्माण नामे संविधानसभाक निर्वाचन भेल । आ दलसब उन्टे हमरे बिसरि खुर्सीक खेल खेलाइए, खेलरबासब । आब तै बात ला’ हम अहाँ सनसन लोक लग आएल छी, माडह अपन अधिकार ।

हमहूँ त’ सात बुफक्करके एक लाल बुफक्कर । कनिके बातस’ बहुते बुफि गेलीऐ । से कहलिए (ऐला संविधानसभामे जाउ न’ । सब कर्ता धर्ता, बढ्मा(बिसून ओएह छैथ ।

लोहछले छुटल,। संविधान उनटे हमरे डाँटि लेलक ( किछु बुफवो सूफवो करैत छिए,कि टार’ बार’ला केकरो कोम्हरो हुलका दैत छिए ? रे सबस’ पहिने ओकरा अपने मानव अधिकार छै से ? ओत’ केओ क्षेत्रक प्रतिनिधि छै ? सबके सब छै, दलके प्रतिनिधि । ओहिमे माने संविधानसभामे आइतैक कोनो कथूक निर्णय भेलैए ?

सब प्रतिनिधि छै, दलीय सम्पैत । भोंटहा सम्पति, से पशुवत ! माने सब निर्णय, समझौता,गठबन्हन दलके नेतासब कोनो कोन्हमे, कोनो खोन्ही(खोभारमे क’ लेत आ से, ऐ प्रतिनिधि(के बले,बुते । आ भेल गेलपर स्वीकृतिक मोहर लगब’ला’ ढडरत सदनमे । अबिते सबके भेंडी(बकरी जकाँ कहत( हे किछु नै बाजू(ऐ प्रस्ताव पर’ । एकरा पार्टीक हवीप बुफ्मू । जेकरेपर कहनैछी, तेकरेपर भोंटके मोहर लगा दू । आब कहू, एकरे कहैछै, मानव अधिकार !आब त’ आउर बेसी सरड पताल धरिके बात सोरस’ पोर धरि बूफमे आबि गेल( मानव अधिकार । ई त’ असलमे पीठ पाछूक बात भेल । तैं त’ किछु गोटे अडाक पाछामे, माने पिठीपर लिखएने रहैछै ( मानव अधिकार !



# निर्मला देवी मेमोरियल हस्पिटल

क्याम्पस चोक, जनकपुरधाम

## गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा जनकपुरमा

तपाईंको लागि एउटै छानामुनि मुद्दु रोग, डायबिटीज र हाई ब्लड प्रेसर सम्बन्धी सम्पूर्ण स्वास्थ्योपचार सेवाहरूः



- Complete Cardiac Check up (CCC प्याकेज जाँच)
- स्वास्थ्य परिक्षण, सल्लाह र परामर्श
- वरिष्ठ मृदु रोग विशेषज्ञद्वारा विरामी जाँच
- ECG (मृदु सम्बन्धि जाँच)
- Echocardiography (मृदुको भिडियो एक्स-रे)
- Ultrasound (भिडियो एक्स-रे)
- प्याथोलोजि जाँच (lipid profile, Cardiac Enzymes LFT, RFT, CBC, PT/INR, Sugar profile with HbA1c) का साथै मृदु सम्बन्धी सम्पूर्ण जाँच
- फार्मसी सेवा
- प्रत्येक महिना नभिक अन्तर्राष्ट्रिय अस्पताल काठमाण्डौबाट आउनुहुने विशेषज्ञ डाक्टरहरूद्वारा स्वास्थ्य परिक्षण सेवा
- उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाको अनुभव



**निर्मला देवी मेमोरियल हस्पिटल**  
क्याम्पस चोक, जनकपुरधाम-४  
फोन नं. ०४१-५२२१६३



𑑖𑑦𑑦

कजली आ मलहार

१

सखिया सावन मे डर लागै जियरा धड़-धड़ धड़कै ना  
श्याम घटा चहु ओर देखावय बिजुली चमकै ना  
पिया मोर परदेश गेल छथि सेजियो भावै ना  
सखिया सावन मे डर लागै जियरा धड़-धड़ धड़कै ना  
सरजुग कहै सखि भजौ हरि के गावय कजलिया ना  
सखिया सावन मे डर लागै जियरा धड़-धड़ धड़कै ना

२

सखि हे सावन के बुत्र भीसी  
पिया संग खेलू पचीसी  
गोर बदन पर कारी चुनरिया  
पतली कमरिया ना  
मुख मे पान नयन मे काजर  
दाँतो मे मिसिया ना  
गरा मे नेकलेस बाहों  
हाथ कँगनिया ना

३

सखि हे आयल अन्हरिया घटा कारी - कारी ना  
लौका लौकै बिजुली चमकै बेरी - बेरी ना  
भींगुर दादुल मोर पपीहरा बारी - ना  
कोयल बोलै पपीहरा बोलै डारी- डारी ना  
सून्य सेज पर बालम रोवै रुसल नारी ना  
सखि हे आयल अन्हरिया घटा कारी - कारी ना

४

भूला भूलै कदम के डारी भूलै कृष्ण मुरारी ना भूलै राधा  
प्यारी ना  
सोन रुप के बनल हिंडोला रेसम के डोरी ना  
राधा भूलै कृष्ण भूलावै फेरा- फेरी ना बेरा - बेरी ना  
चारु दिसि सँ धेरै बदरवा कारी- कारी ना  
सरजुग कहै सखी भजु हरिके गाबू कजलिया ना  
भुला लागै कदम के डारी भुलै कृष्ण मुरारी ना

५

बरसू ललन जी के देशवा रे मेघवा  
बरसू ललन जी के देशवा  
रिमिक भिमिक बुन्द खसत पलंग पर  
भीजत कुसुम रंग सरिया  
कथी रे भीजत रामा लाली रे चुनरिया  
कथी रे भीजत नामी केसिया  
बुन्द भीजत रामा लाली रे चुनरिया  
रभसे भीजत नामी केसिया  
दाम दए लाला पगिया मंगाएव  
भेजब हरिके सनेसवा रे मेघवा

६

बड़ रे चतुर घटबरवा हे ऊधो  
दूर सँ बजौलन्हि नाव चढ़ौलन्हि खेवि लए गेला मुभ्भ धरवा  
आँचर धैलन्हि मोहि भिकभोरलन्हि हेरौलन्हि कैलन्हि अजब  
खेलवा  
नाव हिलौलन्हि मोहि डेरौलन्हि तोड़लन्हि गजमोती हरवा  
सुकविदास प्रभु तोहरे दरस को जुग जुग जिवै घटबरवा

७

डरय मन चमकय बिजुली गगन मे  
सावोन के निशि देखि डर लागै निन्द न होय नयन मे  
जे मुनरी अंगुरी बीच कसकय शोभय कर के कगनमा  
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस को हरि पर प्रेम लगन मे

८

गगन गरजि मेघ बादल बरिसै  
चमकि चमकि बिजुली मोर छिटक

बरिसु न आरे मेघ पियाजी के देशवा  
पिया कोना बुभ्भथिन कलेसवा  
सुरहिदास प्रभु तुम्हरे दरस को  
बरिसु न आरे मेघ पिया जी के देशवा

९

हे चातक अजहुँ न आवथि श्याम  
चंच चपला डरबय अबला परम कुटिल अछि काम  
आस कयल प्रिय फिर गृह आवथि हरि भेल बस ओहि ठाम  
भमर गुंज सुनि कुंज कुंज मे हृदय भेल अति भ्राम  
भन भागीरथ सुत हरि निर्दय उत भेल विधना वाम

१०

लौका जे लौकै रामू बिजली जे छिटकय  
बिजुवन कुहुकै मयूर  
सबके बलमवा रामू घर घर बिराजै  
हमरो बालम परदेश  
कहाँ से लेवै रामा कर रे कागजवा  
कहाँ से. लेब मसिहान  
घर पछुअरवा मे कैथा रे भैया  
भट दए चिठी लिखि देहो  
चारु काते लिखियै इनिति मिनितिया  
बीचे ठामे धनि के विरोग  
घर पछुअरवा मे हजमा रे भैया  
भट दीहो चिठी पहुँचाय  
तोहरो बालम जी के चिन्हियौ ने जानियौ  
ककरा के देव हम पत्र  
हमरो बालमजीके नामे नामे केसिया  
आम कोसा सन आँखि  
एकहि मुठी केर डाँड़ हुनकर छै  
डारिम बिया सन दाँत  
देह जे आरे हजमा हमरो बालम  
हुनके के दीयै तोंहे पत्र  
जाहि ठाम देखिहै हजमा ससुर भैसुर लोक  
चिठिया के लिहै नुकाय  
जाहि ठाम देखिहै हजमा असकर बालमजी  
चिठिया के दीहै खसाय  
चिठिया जे पढ़ै बालम मने मुसुकावै  
नैना से भहरै नीर  
लेहो लेहो आहे राजा अपन नौकरिया  
हमे जाइछी धनि के उदेस

११

दादुर हरि विनु जीवन भार  
चातक पिक अलाप चाप लए अनुदिन मारय मोर  
नाचय मोर घटा घन भ्रहरय नोर हमार  
बिजलि छिककि चहुँ ओर डरावय उमड़ि उमड़ि जलधार  
भगीरथ तनय मिलब पुनि हरि सौँ हरि छथि परम उदार

१२

दादुर हरि नहि आयल देश  
विरह व्यथा दिन अति सतावय धरब जोगिनिक भेस  
करम वाम भेल प्रिय परदेश गेल दए गेल कठिन कलेस  
दादुर हरि नहि आयल देश  
पावस मास मिलब छल आस अजहु न आयल रमेश  
भगीरथ तनय श्याम विनु राधे चन्द्रहु कठिन दिनेश

१३

सखि हे लए जुनि जाह सयनमा

अति सुकुमारी वयस लहु दिनमा काँपत मोर बदनमा  
हमरो बालम रभस नहि जानै ठानै प्रेम कठिनमा  
कखनहु बदन मदन नहि आवै करसँ खसै कँगनमा  
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरसको मोहर परम सयनमा  
१४

सखि हे विरह अगिन तन जारी  
अति सुकुमारी वयस ब्रजनागरी किये तेजल गिरधारी  
नन्दलाल सँ प्रेम बहत छल साल देल उर भारी  
समय जानि कए बनफूल फुलायल भमरा बहुते रारी  
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरसको हरि के चरण बलिहारी  
१५

ग्रीष्म समय गेला मधुवन रंगमहल न सोहावै गे देया  
आयल बरसा समैया  
बरिसय मेघ दमसै दामिनी वन मे बोलय कोइलिया गे दैया  
आयल बरसा समैया  
आयल पावस विरहा सतावै भोजन भवनो न भावै गै दैया  
आयल बरसा समैया  
मोहन रास रचन वृन्दावन रहल मधुपुर छैया गे दैया  
आयल बरसा समैया  
एक त वैरी भेल कृष्ण कन्हैया दोसरे शरत के अवैया गे दैया  
आयल बरसा समैया  
अपनो न आवै लिखि न पठावै कुबड़ी राखल लोभैया गे दैया  
आयल बरसा समैया  
कहय सूर ब्रज वनिता आवि कए मिलत कन्हैया गे दैया  
आयल बरसा समैया



### The Best Hotel of Janakpur



आरामदायी आवासका लागि,  
सर्वोत्तम भोजन, नास्ताको लागि,  
स्वच्छ र शान्तिपूर्ण व्यवस्था लागि,  
रामानन्द चौक जनकपुरधाम  
फोन नं.: ०८१ ५२७६२६, ०८१ ५२७६२७

## होटल सीता पैलेस



मूले सियाप्यारी, . . . . .

लोकगीतक कोटिमे आबि गेल अछि । मन रे मन, सावनक बुन्-  
भ्रिस्सीक फुहारक यो पाबि मगन भ’ गाब’ लगैछै-  
**वदरा उमड़ि घुमड़ि घन बरसय**  
**बुन्दिया बरसन लागए ना ।**

**दादुर मोर पपीहा गाबय**  
**जिया उमताबय ना ।**  
**वदरा उमड़ि घुमड़ि घन बरसय...**

**विरहक आगि कुहुकि कुहकाबय**  
**बइरी कोइलिया ना ।**  
**वदरा उमड़ि घुमड़ि घन बरसय...**

**पिउके पाँती लिखल हम कत विधि**  
**तइयो ने पिघलल ना**  
**वदरा उमड़ि घुमड़ि घन बरसय...।**  
**०००**

**पश्चिम दिशास’ उठल बदरिया**  
**पूर्व दिशास’ आएल पवन पुरबैया**  
**गे दैया अंगना बरसै बदरिया**  
**सजन घर ना हे सजनी !**  
**कातिकमे पिया गेल परदेशिया**  
**कहि गेल आएब चैत महिनमा**  
**गे दैया जमि गेलै घास डगरिया**  
**सजन घर ना हे सजनी !**

प्रचलित रागभासक बहुत लोकप्रिय गीत अछि - भुला । ई गीत लोक मन मानसमे घर क’ गेल अछि । साओनक, कोनो एहन भुला, कजरी आ पावसगीतक कार्यक्रम नहि अछि, नाच-नृत्य नहि अछि, जाहिमे एहन आ ई गीतसब नहि गाओल जाइत हो । सब दिनमा रगध टेरस’ ई मनमे खूब बसि गेल अछि । लोक मानसमे ऋतुगीत मचलैत भड़ल पड़ल अछि । जे मास आ ऋतु हुअए, अवसर आ लोकोत्सव हुअए, मगन मन मातिक’ गाबे करैछै । भुला सन-सन लोकगीत लोक कार्यक्रम वा अवसरे विशेषपर गाओल करैछै से नै, एला खाली मन मगन हुअ चाही आ एहनमे, कखनो काल भक्तियोमे गुन-गुनाय लागल-

**भुला लगे कदमके**  
**डारि, भूले कृष्ण मुरारी ना**  
**कौन काठके बनल**  
**हिड़ोला, कोन वस्तुके डारी**  
**राधा भूलय कृष्ण**  
**भुलावय बेरा बेरी ना**

**भुला लगे कदमके डारि, भूले कृष्ण मुरारी ना**  
सीताराम, राधाकृष्ण, शिव-पावर्ती मात्र भगवाने छथि सेहे नहि, अपन लोकमानसक आधारभूमि आ आत्मीय अपनत्वस’ भड़ल छथि । मानवीयताक कारणेक अपन सम्पूर्ण अपूर्णता, परम भाव विशदताके भगवानपर आरोपित क’ ओकरा अपना मे देखब एहि लोकक सहजता अछि । नै अपना मे त’ भगवाने मे सही, धरि मनक सब ककुलता भाव, शुभ आ सुन्दर आनन्दके साक्षतीकरण क’ देख’ त’ लगैत अछि । इएह कारण अछि जे सोहर-समदाओन राम-सीताक नामे गवैछ । प्रत्येक दुलहा-दुलहिन, कनिया-वरक विवाह एकरे मे विषयक गीत गाओल जाइछ । नव प्रगतिवादी, नव संरचनावादी सोंचक चिन्तक राजा-रानीके सामन्ती-शोषणक रुपमे देखैत अछि आ गाथा एवं लोककथामे, राजा-रानी आ परी आ राजकुमारक उपस्थितिके उखारि फेकबाक संगहि जन-नायकके, अपनेमेस’ अपनेके उपस्थित कर’ चाहैत अछि । लोकमानसके, शक्ति-सामर्थहीन लोकके लेल राजा-रानी, परी आ राजकुमारी उत्तमता उत्कर्ष सौंदर्य आ आनन्द-उत्साहक पहुचक चीज अछि । आव त’ फिल्मी, सिरियल हिरो-हिरोइन आदर्श आ ब्रैण्ड एहि दुआरे बनल जा रहल अछि । आम लोकमे, परम्परागत मानसिक संस्कारमे अपन सीतेराम परम अराध्य-

**भुले सियाप्यारी, भुलावत रसिया**  
**हिलावत रसिया भुलावत रसिया**

**भुला लगे कदमके डारी,भुलो सियाप्यारी ना**  
असलमे भुला एकतरहक खेल अछि, रसकेलि अछि । एकर आस आ मचीकक संगे भुला पावसगीतक स्वर लहरी अति मनमोहक आ रागात्मक होइछ । ई राधा-कृष्ण, सीता-राम विषयक अछि आ मन्दिर कुटीमे विस्तार पौलक अछि । एकर आनन्द सबस’ सुन्दर अछि, अनमन परमानन्द, ब्रह्मानन्द आ खेलानन्द सनके आ तएँ भगवानके समर्पित अछि, मन्दिर कुटीके अर्पित अछि ।

एकटा दुरमतिया खाली ई अछि जे भुलाके समग्रताके एकर बाल सरोकारके ओहन भ’क’ बुझवे नै कएल गेलै । लोरी पलड़ागीतमे भूलाक स्वरुप आ खेल रसानन्द नै छे की ? कोन एहन बच्चा-बुच्ची होएत जे एकरास’ अपरचित होएत ? मैथलीमे बहुतो भुलुआ निनियागीत आ लोरीसिब अछि । आधुनिक गीतकारमे रवीन्द्रनाथ ठाकुरक भुलागीतक अपूर्व शब्द-राग अछि-

**घुघुआ खेलथि दुलरुआ गे माइ घुघुआ**  
**भूल भूल भुले भूल, सुगा भुल मैना**  
**भूल ।**

**भुलना भुलथि दुलरुआ गे माइ घुघुआ**  
**दूधक गाछ फूल फुलाएल**  
**ममता मेघक चान औघाएल**  
**माइक प्राण पहरुआ रे मोर बौआ**



**भूल भूल भूले भूल सोना भूल रुपा भूल**  
**बाबाकेर भुलना भलूल**  
**भुलना भुलथि दुलरुआ गे माइ घुघुआ ।**  
**आशक चौमुख दीप जराओल**  
**त्रिभुवनराज जतन बिनु पाओल**  
**दुखियाकेर लाले लाले ढौआ रे मोर बौआ**  
**भूल भूल भूले भूल, हीरा भूल मोती भूल**  
**बौआ आँखिमे निनियाँ भूल**  
**भुलना भुलथि दुलरुआ गे माइ घुघुआ**  
**निनियाँ पहिरत चकमक घघरी**  
**सड़ ल’ जयतौ सपनक नगरी**  
**भूकि भूकि मरत कुकुरबा रे मोर बौआ**  
**भूल भूल भूले भूल, बौआ आँखिक निनिया भूल**  
**सुत सुत बऔआ सूति रहलौ कौआ**  
**जगबे उगत भोरुकबा रे बौआ**  
**भुलना भुलथि दुलरुआ गे माइ घुघुआ ।**

□□□

**कथा**  
**लछमीनिया**



s'df/ ef:s/

अनमन सासुसे सनके तेनुआहीबाली, लछ्मीनीयाँ ! जेहने रहै लक्ष्मिनियाके साउस, बात-बात पर फकरा सुनब'बाली, तेहने ढाठी-छिच्छा,एकरो छै । ओहिना बात-बात पर मुँहस' फकरा फदका निकलि जाइछै ।

ओना लक्ष्मिनियाके घरबला परफेसर, बेटा कमैआ तैयो लक्ष्मिनिया के बड़ दुख । दुख खाय पिय'के, पहिर'-ओढ़'के नइ, दुख काज-राजके । जनकपुरमे रहए त' गामके आ गाममे रहए त जनकपुरके चिन्ता । इहे दुख रहै छै । 'आइ गामके सब आम होतै तोड़ि लेने', सब रबी-राई होतै चरा-लेने, आ कहि जे साँचे किछ तोड़ि लेने, चरा लेने रहए त जतै स' देखेए ततैस' शुरु भ'जाए होलियाब'के- “कहै छलियै मरदबा के हम आइये गाम जाइछी त' रोकि देलक, नइ हमरा मिटिङ्गमे जाए पड़तै कनि धोती-कुरता धो' दिअ । भुठोके मिटिङ्ग-माटिङ्गमे जाइत रहैए । एको रुपैया त दै नै हइ आ ओहि मिटिङ्गला दू-दू दिन अगते सँ अपनो लिखा-पढी करैत, फोन-फान करैत, बेहाल रहैय आ हमरो धोती-कुरता त इ खोजी दे त ऊ निकालि क ध दे करैत-करैत पेड़ने रहैय । हम काल्हिए आएल रहिती त अते राइ-छिइ होइत, जेहे खैति सेहो त कया-मनुवा जुड़ैति से नइ । एगो छरो जे हइ ओकरा कहैत रहैछियै से रे बौआ जो कनी गाछी-विरछी, रबी-राइ सब देखलीहे आ तुरन्ते अपन चलि अइहे से ओकरा गाम अवैत तेना बाघ गिरैत रहैहइ कि कथी से नै जाइन ।

लक्ष्मिनियाके घरबला परफेसर तहुके ओकरा बड़ दुख । ओकरा हिसाबे जतेकाले मिटिङ्ग करतै ओते कालमे त खेत जोता लेतै किछ वाग क देतै जाहिस' किछ उवजोबारी होतै, ओकरे बेचिक' ढौओ रुपैया होतै ।

अहिना सर्वादिन जकाँ कुहि होइत भनभनाइत जनकपुर आएल । घर लग पहुचते घरक आगू-पाछुमे रहल गाछ, लत्तीसभके ठेकानैत, बिचारैत आएत आ कहूँ कोइ कछि तोड़ने त नइ हए । आ कहि जे कोनो किछु घटल रहल त' घरके दुहाइरे सँ बाज' के शुरु कर' लागल “देखी कहि क गेल छलियै एकरासबके अपन अगोरा पछोड़ा तकै रहिये । तैयो अतेक लोक घरमे हइ आ एगो लक्ष्मिनिया नै हइ त सब 'जरम-जरी सब चरा लेलक ! सबहे तोड़ि लेलकै”। सबटा हमर कएल-धएल नाश भ' गेल ।

अते सुनिते बेटा-पुतहू सब हाँइ-हाँइक' दौगल आब की भेलै ? जेठकी पुतहू कहै- हम तकिते छीऐ । कहाँ, केउ नै किछुमे भिड़लैए ।

–“नै कोइजे भिरलै त ओइ लुहरीमे एगो कम केना हइ” लक्ष्मिनिया बाजल “गाम जाएबरेमे हम देखक' गेल छली त' तिनटा छलै आ अखनि दुइएटा है”?

बूढिया आरो नै खिसिया जाए तै डरे छोटकी पुतहू बाजल- “ए उ त हम ओकरा सरियाब' गेलिए त' एगोडाढ़ि टुटि गेलै । तब जा'क' लक्ष्मिनिया किछ ठण्ढाएल । भन भेलै जे तों अपने सरियाब' गेल छला, हे रनियाँ !

नाँ गुणे लछ्मिनियाँ अतेक बेहाल बेटे-पुतहु ला' रहए । किछ लाबए त बिछल-बिछल घरबला, बेटा-पुतहू लागि राखए । अपना कनहे-कोतरे, बसीआएल, बिगरलहे खाँ लिए ।

बेटाके नोकरी दोसर सहरमे भेलै त चारि-पाँच दिन अगतेसँ सर-समानके मोटा,बोरा ओरिआब लागल ।

“एल लएली बेल लएली, छ घैला तेल लएली..... । नुन तेल सँ ल'क' कपड़ा-लत्ता तक ओरिआ-ओरिआ धर' लागल जे कहि किछ बेटा-पुतहूके छूटि नए जाए । बेटा-पुतहू कएए कि जे चिज-वित छुटि जएतै से ओतै किन लेवै । लछ्मिनिया अनमनएले “ले त धर तोरा ओतै सब चिज भेटतौ त” कहलक ।

लछ्मिनियाके सैतल किछ कहि छुटे, मात्रे एगो घर दुहारि पोछ लागि पुरान-धुरान कपड़ा कत' स लाउँ । बेटा सोचलक आब घरेस' कोइ अएतै त ओकरे स मडालेब जे माइके कहि दैछियै । पुतहू कहे नइ माइ कहि पित्ता जएतै । बेटा कहए एह नइ पित्तैतै । बेटा लछ्मिनियाके फोन कएलक “माइ कानो पुरान-धुरान कपड़ा घर दुहारी पोछ ला' चाहि केउ अएतै त पठा दिहे” । लछ्मिनिया बाजके शुरु कएलक - “उँ तहिया कहीलयौ ठकानी-ठेकानीक ' समान सब राख' त नइ आखिर छुटिए गेलौ । जेहो फाटल-पुरान नुआ छलै जे हम जायनगरमे किनने रहियै सेहोके त' दोकानबला ठकिएलेने रहए से बला नुआके त काल्हिए ओइ वर्तनवालीसँ बदलि लेलिए । तेहन चुट रहै उहो वर्तनवालीसे ओतेकटाके नँ सायमे किनने रहि तेकरा एगो कटोरा मात्रे देलक उहो कते भगड़िणी तब जा' क' देलक । तों पहिने कहिते । अच्छा थम: अइ छराके गंजी हइ जे उँ नै पेन्है हइ जेकरा कहै बड़ पुरान भ' गेलै से हम पठा देवौ । आब राख फोनके बिल वेसी उठतौ । एम्हर लछ्मिनिया के बेटा जे आधा घंटा सँ पुरान कपड़ा ला' फोन कएने छल से कहलक “अच्छा होतै”, ओकरो आब कोनो दोसर विषयपर किछ पुछ्के मन नै भेल आ फोन राखि देलक । आ अपन कनिया जे तखनस लछ्मिनिया माइ कि कहलकै से बुझलेल उत्सुक छल । तकरा दिसी घुमिक अपन जेबीमेके रुमाल ओकरा द'क' कहलक “होउ तावे अहि ल'क' काम चलाउ” ।



